ताल-बेताला

शशिकांत गुप्ते,
मोबाइल नं.
78984-88217

वो सुबह कभी तो आएगी

यह खबर बहुत ही दिलचस्प भी है और हैरतअंगेज करने वाली भी है आतंक को दुनिया से उखाड़ फेंकेंगे?

क्या आतंक कोई वस्तु है?

आतंक की पोषक कट्टरपंथी मानसिकता होती है।

कट्टरता के पर्यायवाची शब्दों की सूची निम्नानुसार है।

हठधर्मिता अपने दकियानूसी सोच पर अड़े रहना।

मतांधता किसी विशेष मत या कट्टरपंथी विचारधारा में अंधा होना।

अतिवाद चरमपंथी विचार।

दुराग्रह गलत और अनुचित हठ।

असहिष्णुता दूसरों के नेक विचारों से असहमति प्रकट करना।

संकीर्णता संकुचित विचारधारा।

जुनून/उन्माद किसी विषय या विचार के प्रति अत्यधिक पागलपन।

पूर्वाग्रह पहले से ही किसी के बारे में ग़लत और विद्वेष पूर्ण राय बना लेना।

सभी शब्दों का एक ही अर्थ कट्टरता ही है। कट्टरता ही आतंक की जनक है। जब किसी व्यक्ति की मानसिकता में कट्टरता पनपती है,तब वह व्यक्ति अपने विवेक को खो देता है,उसमें वहशियत हावी हो जाती है। वहशियत और मतांधता एक दूसरे की पूरक शब्द है। कट्टरता की मानसिकता से ग्रस्त लोग ही उन्मादी होते हैं।

आए दिन खबरें पढ़ने सुनने और देखने में आती है,किसी कथित धार्मिक संगठन के द्वारा विधर्मियों को आराधना नहीं करने देना,विधर्मियों के धर्मस्थलों को नेस्तनाबूत करने की कोशिश करना,यदि किसी जाति के व्यक्ति ने यदि भगवान की कथा का वाचन किया तो उसे प्रताड़ित करना ऐसी वैमनस्यता पूर्ण और विध्वंसक मानसिकता आतंक से क्या कम है?

कानून और व्यवस्था के नाम पर बुलडोजर को संस्कृति कहना,लोकतंत्र की बुनियाद असहमति को नकारना भी कट्टरता ही कहलाएगी।

अबला के साथ सामूहिक बलात्कार जैसा जघन्य कृत्य भी आतंकवाद ही कहलाएगा।

आतंक का मतलब ही लोगों में दहशत फैलना।

किसी चिंतक ने कहा है,कभी भी तहज़ीबे आपस कभी नहीं टकराती है, वहशतें ही आपस में टकराती है।

अंत में युग निर्माण द्वारा प्रचारित स्लोगन ही योग्य सलाह होगी।

हम सुधरेंगे तो युग सुधरेगा

वहशतों के दौर में आमजन की क्या मानसिक स्थिति होती है बयां होता है शायर ऐतबार साजिद द्वारा रचित निम्न शेर में।

फिर वही लम्बी दोपहरें हैं फिर वही दिल की हालत है

बाहर कितना सन्नाटा है अंदर कितनी वहशत है

52 वा खजुराहो नृत्य समारोह का समापन, चित्र:संदीप धांडे, इंदूर

कांग्रेस की नज़रें 5 राज्यसभा सीटों पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की राजनीति में एक बड़े घटनाक्रम की तैयारी है। 16 मार्च को राज्यसभा की 37 सीटों के लिए चुनाव होना है। इनमें से कांग्रेस पार्टी 5 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारने की तैयारी में है। ये सीटें छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा (एक-एक सीट) और तेलंगाना (दो सीटें) से हैं। इन चुनावों में पार्टी के कई दिग्गज नेताओं के भाग्य का फैसला होगा।

तेलंगाना: सिंघवी की वापसी तय

तेलंगाना से कांग्रेस को दो राज्यसभा सीटें मिलने की संभावना है। इनमें से एक सीट पर वरिष्ठ अधिवक्ता और कांग्रेस के प्रमुख प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी की वापसी लगभग तय मानी जा रही है। सिंघवी राज्यसभा में पार्टी के महत्वपूर्ण चेहरा रहे हैं और संसद में अपनी तर्कपूर्ण वक्तृत्व शैली के लिए जाने जाते हैं। पार्टी के भीतर उनके प्रति समर्थन मजबूत बना हुआ है।

हरियाणा: हुड्डा की पसंद निर्णायक

हरियाणा से एक राज्यसभा सीट के लिए कांग्रेस में कड़ा मुकाबला देखने को मिल रहा है। सूत्रों के अनुसार यहां से उम्मीदवार का चयन कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा की पसंद के आधार पर तय हो सकता है। दौड़ में शामिल प्रमुख दावेदारों में तीन नाम सबसे आगे हैं:

राज बब्बर - प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, उत्तर प्रदेश से जुड़े रहे हैं लेकिन हरियाणा से दावेदारी पेश कर रहे हैं।

सुप्रिया श्रीनेत - पार्टी की राष्ट्रीय प्रवक्ता और सोशल मीडिया पर सक्रिय चेहरा, युवा मतदाताओं में लोकप्रिय हैं।

अनिल जयहिंद - हरियाणा के दलित-पिछड़े वर्ग में मजबूत पकड़ रखने वाले नेता, पार्टी के जमीनी कार्यकर्ता के रूप में पहचाने जाते हैं।

राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि हुड्डा की पसंद ही यहां निर्णायक साबित होगी, क्योंकि हरियाणा कांग्रेस में उनका वर्चस्व निर्विवाद है।

छत्तीसगढ़: टीएस सिंह देव बनाम फूलो देवी

छत्तीसगढ़ से एक राज्यसभा सीट के लिए पार्टी में दो दिग्गज नेताओं के बीच अंदरूनी होड़ चल रही है। एक ओर हैं टीएस सिंह देव - जो छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के सबसे वरिष्ठ और कद्दावर नेताओं में से एक हैं, पूर्व मंत्री रहे हैं और पार्टी के भीतर उनका व्यापक सम्मान है। दूसरी ओर हैं फूलो देवी नेताम - जो आदिवासी समाज से आती हैं और उनकी उम्मीदवारी सामाजिक न्याय एवं आदिवासी प्रतिनिधित्व के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण मानी जाती है। पार्टी के लिए यह फैसला कठिन होगा कि वह अनुभव को प्राथमिकता दे या सामाजिक संतुलन को।

हिमाचल प्रदेश: आनंद शर्मा या प्रतिभा सिंह?

हिमाचल प्रदेश से राज्यसभा की एक सीट के लिए कांग्रेस में दो प्रभावशाली नाम चर्चा में हैं। आनंद शर्मा - पूर्व केंद्रीय मंत्री, राज्यसभा में विपक्ष के एक सशक्त आवाज और पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं में गिने जाते हैं। वहीं प्रतिभा सिंह - पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह की पत्नी और हिमाचल प्रदेश कांग्रेस की अध्यक्ष हैं। प्रतिभा सिंह का पहाड़ी राज्य में गहरा जनाधार है और 'वीरभद्र विरासत' उनके पक्ष में काम करती है। यह सीट पार्टी की आंतरिक राजनीति का भी आईना होगी।

संक्षेप में: कांग्रेस की 5 सीटों का समीकरण

तेलंगाना (2 सीटें): अभिषेक मनु सिंघवी (तय), दूसरी सीट पर निर्णय बाकी।

हरियाणा (1 सीट): राज बब्बर / सुप्रिया श्रीनेत / अनिल जयहिंद (हुड्डा की पसंद निर्णायक)।

छत्तीसगढ़ (1 सीट): टीएस सिंह देव बनाम फूलो देवी नेताम।

हिमाचल प्रदेश (1 सीट): आनंद शर्मा बनाम प्रतिभा सिंह

विश्लेषण: इन 5 राज्यसभा सीटों पर कांग्रेस के चयन से पार्टी की आंतरिक राजनीति और विभिन्न राज्यों में उसकी रणनीति का पता चलेगा। जहां कुछ राज्यों में वफादारी और अनुभव को प्राथमिकता दी जाएगी, वहीं कुछ जगहों पर सामाजिक समीकरण और जनाधार को ध्यान में रखा जाएगा।

आशीष चंद्रनारायण दुबे
राजनीतिक रणनीतिकार एवं चुनाव विश्लेषक
द पॉलिटिकल लैब

खुदाई के दौरान मिली 800 से 1000 ईस्वी के बीच की कब्र

पनामा सिटी (एजेंसी)। वैज्ञानिकों को पनामा सिटी से करीब 200 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित एल कानो पुरातात्विक पार्क में खुदाई के दौरान 800 से 1000 ईस्वी के बीच की कब्र मिली है। शोधकर्ता वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यह दफन स्थल एक हजार साल से भी अधिक पुराना है। मुख्य शोधकर्ता जूलिया मायो ने बताया कि कब्र से मिले कंकाल के चारों ओर सोने के आभूषणों और मिट्टी के बर्तनों का बड़ा संग्रह मिला है। कंकाल के साथ सोने के कंगन, झुमके और छाती पर पहना जाने वाला एक खास आभूषण मौजूद था, जिन पर चमगादड़ और मगरमच्छ की आकृतियां उकेरी गई थीं। इन आकृतियों को उस समय की सांस्कृतिक धारणाओं और कला का प्रतीक माना जा रहा है। शोधकर्ताओं का कहना है कि मिले हुए गहनों की गुणवत्ता और उनकी प्रतीकात्मक डिजाइन इस बात की ओर इशारा करती है कि यहां दफनाया गया व्यक्ति समाज में बेहद ऊंचा दर्जा रखता था। जूलिया मायो का मानना है कि यह संभवतः उस समुदाय का सबसे बड़ा नेता, योद्धा या प्रभावशाली सदस्य रहा होगा। एल कानो क्षेत्र पिछले दो दशकों से पुरातात्विक अध्ययन का प्रमुख केंद्र बना हुआ है।

अगर शिक्षक लगातार 7 दिन गायब तो जाएगी नौकरी

लोक शिक्षण संस्थान विभाग ने आदेश जारी किया सख्त फरमान

भोपाल। मध्यप्रदेश में अब स्कूलों से गायब रहने वाले शिक्षकों पर बड़ी कार्रवाई तय मानी जा रही है। लोक शिक्षण संस्थान विभाग के नए निर्देश के मुताबिक यदि कोई शिक्षक लगातार 7 दिन तक बिना सूचना के अनुपस्थित रहता है, तो उसकी सेवा सीधे समाप्त की जा सकती है।

इस फैसले ने शिक्षा महकमे में हलचल मचा दी है। स्कूल शिक्षा मंत्री राव उदय प्रताप ने दो टूक कहा कि विभाग में अनुशासन सर्वोपरि है। हर सिस्टम की अपनी मर्यादा होती है। अगर शिक्षक ही जिम्मेदारी नहीं निभाएंगे तो बच्चों का भविष्य कैसे सुरक्षित रहेगा? मंत्री ने साफ कर दिया कि शिक्षा व्यवस्था में ढिलाई या मनमानी अब किसी भी हाल में स्वीकार नहीं की जाएगी। आदेश में कहा गया है कि लगातार 7 दिन बिना सूचना गैरहाजिरी पर सेवा समाप्ति की कार्रवाई की जाएगी। संबंधित अधिकारी को अनुपस्थिति की रिपोर्ट देना अनिवार्य है। विद्यार्थियों की पढ़ाई प्रभावित होने पर जवाबदेही तय होगी। सूत्रों के अनुसार, कई जिलों से शिक्षकों की लगातार गैरहाजिरी की शिकायतें मिल रही थीं। इससे सरकारी स्कूलों में पढ़ाई प्रभावित हो रही थी और अभिभावकों में नाराजगी बढ़ रही थी। विभाग ने इसे गंभीरता से लेते हुए सख्त रुख अपनाया है।सख्ती या सख्त संदेश?मंत्री राव उदय प्रताप ने कहा कि यह कदम किसी के खिलाफ नहीं, बल्कि व्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए है। बच्चों के भविष्य से कोई समझौता नहीं होगा। जो जिम्मेदारी निभाएगा, उसे पूरा सम्मान मिलेगा; लेकिन लापरवाही पर सीधी कार्रवाई होगी। अब देखना होगा कि इस सख्त आदेश के बाद शिक्षा व्यवस्था में कितना सुधार आता है और गैरहाजिर रहने वाले शिक्षकों पर क्या असर पड़ता है। फिलहाल, शिक्षा विभाग ने स्पष्ट कर दिया है ड्यूटी से गायब रहना अब महंगा पड़ेगा।

अब जापान की मिसाइलें चीन की दहलीज पर होंगी तैनात!

टोक्यो (एजेंसी)। जापान और चीन के बीच समुद्र में छिड़ी 'कोल्ड वॉर' अब एक बहुत ही खतरनाक मोड़ पर पहुंच गई है। जापान ने ड्रैगन को घेरने ऐसा मास्टरप्लान तैयार किया है, जिसने राष्ट्रपति शी जिनपिंग की नींद उड़ा दी है। जापान अब अपने सबसे पश्चिमी द्वीप योनागुनी को एक 'मिसाइल बेस' में बदलने जा रहा है। यह द्वीप ताइवान से महज 100 किलोमीटर दूर है, जिसका सीधा मतलब है कि अब जापान की मिसाइलें चीन की दहलीज पर तैनात होंगी। रक्षा मंत्री शिंजिरो कोइज़ुमी के इस ऐलान ने चीन में खलबली मचा दी है, क्योंकि इसे चीन के 'ताइवान मिशन' के लिए सबसे बड़ा रोड़ा माना जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक जापानी रक्षा मंत्री ने कहा है कि उनका देश पांच साल के अंदर ताइवान के पास एक छोटे से द्वीप पर मिसाइलें तैनात करेगा। इस कदम से चीन के साथ तनाव बढ़ने की आशंका बढ़ गई है। कोइज़ुमी ने कहा कि जमीन-से-हवा में वार करने वाली मिसाइलें, जो एयरक्राफ्ट और बैलिस्टिक मिसाइलों को मार गिराने में सक्षम हैं, मार्च 2031 तक योनागुनी पर तैनात कर दी जाएंगी। उन्होंने कहा कि इस काम की तेजी आगे जाकर पता चलेगी, लेकिन हम साल 2030 के लिए योजना बना रहे हैं। उन्होंने पहली बार तैनाती के शेड्यूल पर विस्तृत जानकारी दी। कोइज़ुमी ने यह ऐलान जापान की पीएम साने ताकाइची के ताइवान की सिक्योरिटी को लेकर टोक्यो और बीजिंग के बीच करीब ठप पड़े राजनियक रिश्तों के बीच किया है। ताकाइची ने पिछले साल सांसदों से कहा था कि अगर ताइवान को लेकर संघर्ष जापान के लिए खतरा बनता है, तो ताइवान पर चीन के हमले में उनका देश अपनी रक्षा की खातिर ठोस कदम उठाएगा। इसके बाद चीन ने काफी सख्त रवैया अपनाया था।

कार्टून कोना....

बाघों की कम आबादी वाले राज्यों में मप्र के बाघ बढ़ाएंगे कुनबा

राजस्थान, छत्तीसगढ़ और ओडिशा भेजे जाएंगे 8 टाइगर

भोपाल। मध्य प्रदेश देश का ऐसा राज्य है, जहां बाघों की संख्या सबसे ज्यादा है। दूसरी तरफ कई ऐसे राज्य हैं, जहां बाघों की संख्या उंगलियों पर गिनने लायक है। पर्यावरण और वन्यप्राणियों का महत्व समझते हुए अब ये राज्य बाघों की संख्या बढ़ाने के लिए मध्य प्रदेश की तरफ उम्मीद भरी निगाहों से देख रहे हैं।

राजस्थान, छत्तीसगढ़ और ओडिशा जैसे राज्यों की जहां बाघों की संख्या एक सैकड़ा पार भी नहीं हो पायी है। यहां बाघों का कुनबा बढ़ाने के लिए मध्य प्रदेश से बाघ मांगे गए हैं। हालांकि, राजस्थान को एक बाघ हाल ही में दिसंबर में भेज दिया गया है। लेकिन अन्य राज्यों को बाघ भेजे जाने के लिए अभी उनकी मांग का इंतजार किया जा रहा है। इन तीनों राज्यों में मध्य प्रदेश से कुल 8 बाघ भेजे जाएंगे। इस शिफ्टिंग के लिए तमाम औपचारिकताएं पूरी हो चुकी हैं, लेकिन मध्य प्रदेश सरकार इन राज्यों की तैयारियों और मांग के आधार पर बाघों की शिफ्टिंग करेगी।

तीनों राज्यों में बाघों की संख्या 100 से कम

जहां तक मध्य प्रदेश, कर्नाटक और उत्तराखंड की बात करें, तो ये देश के तीन ऐसे राज्य हैं जहां बाघों की संख्या सबसे ज्यादा है। कुछ राज्य ऐसे हैं, जहां बाघों की संख्या शून्य है और कुछ राज्य ऐसे भी है जहां बाघों की संख्या 100 से ऊपर तक नहीं हो पायी है। मध्य प्रदेश के पड़ोसी राज्य छत्तीसगढ़ और राजस्थान की बात करें, तो यहां बाघों की संख्या काफी कम है। राजस्थान में 2022 की गणना के अनुसार 69 बाघ हैं, तो ओडिशा में 20 और छत्तीसगढ़ में महज 17 बाघ हैं।

बाघ शिफ्टिंग की तमाम औपचारिकताएं पूरी

इन राज्यों की मांग पर एक राज्य से दूसरे राज्य में बाघ शिफ्टिंग के लिए होने वाली तमाम औपचारिकताएं पूरी हो चुकी हैं। पीसीसीएफ वाइल्डलाइफ शुभरंजन सेन ने ईटीवी भारत से बातचीत में बताया कि एक राज्य से दूसरे राज्य में बाघों की शिफ्टिंग के लिए राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के माध्यम से औपचारिकताएं पूरी होती है। मांग करने वाले राज्यों को एनटीसीए से अपील करनी होती है। फिर एनटीसीए जिस राज्य में बाघों की संख्या ज्यादा होती है, उनसे बाघों की शिफ्टिंग के लिए सहमति मांगता है और सहमति के बाद भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून द्वारा बाघ मांगने वाले राज्यों में रिसर्च करायी जाती है। भारतीय वन्यजीव संस्थान एक रिपोर्ट तैयार करता है और उस रिपोर्ट के आधार पर एनटीसीए बाघों की शिफ्टिंग की अनुमति देता है। शुभरंजन सेन ने बताया कि ये तमाम औपचारिकताएं पूरी कर ली गयी हैं। मध्य प्रदेश ने राजस्थान, छत्तीसगढ़ और ओडिशा के लिए बाघ देने पर समहति दे दी है। एक बाघ दिसंबर 2025 में राजस्थान शिफ्ट भी हो चुका है।

स्वामी मेसर्स एसोसिएटेड प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (एम.पी.) प्रा.लि. इंदौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक मोनिका सेठ द्वारा 17, न्यू देवास रोड (संजय गांधी मार्ग) इंदौर से मुद्रित एवं 5, प्रेस कॉम्प्लेक्स, इंदौर से प्रकाशित संपादक-मोनिका सेठ,
फोन नं. 3551753, 2434701, 2544433, समाचार पत्र से प्रकाशित समाचार के लिए सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा। समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार*